केहे केहे दिल जो केहेत है, ताथें अधिक अधिक अधिक।
सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक।। ८३ ।।

बार-बार जो दिल वर्णन करता है तो उससे शोभा अधिक से अधिक बढ़ती जाती है। यह शोभा अखण्ड परमधाम के तन और इश्क की है, जिसका बयान मैं रंचमात्र भी कर नहीं सकती।

अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए।
पैदास भूखन इन बिध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे।। ८४ ।।

अब तक मैं परमधाम को, सोने और नगों को तथा आभूषणों को संसार से मिलाती थी और सोचती थी वह चित्त में चाहे अनुसार पहनते हैं।

एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ़ होए।
सो तो अर्स में है नहीं, वाहेदत में नहीं दोए।। ८५ ।।

एक को दूसरे से मिलावें तो घट-बढ़ हो। परमधाम में घट-बढ़ होती नहीं है, क्योंकि वहां कोई दूसरा है ही नहीं। सब श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा है।

घड़े जड़े ना समारे, ना सांध मिलाई किन।
दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन।। ८६ ।।

परमधाम के वस्त्र, आभूषण न तो किसी ने बनाए हैं, न घडे हैं, न जड़े हैं, न संवारे हैं। यह सब वस्त्र, आभूषण दिल चाहे अनुसार नगों के बने हैं।

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत।। ८७ ।।

परमधाम में पहनना, उतारना नहीं होता। दिल के चाहे अनुसार ही सिनगार बदल जाता है। जब जहां जैसी शोभा चाहिए, वह वहां पहले से ही दिखाई देती है।

जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि तुम अपने को परमधाम की रूहें कहलाती हो और तुम्हारी परआतम मूल-मिलावे में बैठी है, तो एक क्षण के लिए श्री राजजी महाराज का स्वरूप नहीं छोड़ना।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ८८७ ।।

श्री सुन्दर साथ को सिनगार

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल।। १ ।।

सुन्दरसाथ मूल-मिलावा की हवेली में हिल-मिलकर जैसे एक ही अंग हों, चकित होकर बैठे हैं। सबके अंग से अंग मिले हैं और सबके दिल एक हैं।

जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार।
सागर भर्‍या सब एक रस, माहें कई बिध तरंग अपार।। २ ।।

लगता है परमधाम में सब सखियों का रूप एक है और एक ही सिनगार है। यह सागर के समान एक रस भरा है, जिसमें कई तरह की तरंगें उठ रही हैं।

Nijanand App

निलवट बेना चांदलो, हरी गरदन मुख मोर।
नैन चोंच सिर सोभित, बीच बने तरफ दोऊ जोर।। ३ ।।

सभी सखियों के माथे पर बिंदा (टिक्का) बंधा है। उस बिंदा की बनावट ऐसी है जिसकी हरी गर्दन, नैन, चोंच, सिर, मुख सब मोर की बनावट है, जिनकी चोंचें दोनों तरफ हैं।

निरमल मोती नासिका, कई बिध नथ बेसर।
जोत जोर नंग मिहीं नकस, ए बरनन होए क्यों कर।। ४ ।।

सखियों की नाक में बेसर और नथनी शोभा देती है, जिसमें निर्मल मोती और बारीक नक्शकारी में नग जड़े हैं। इनका वर्णन कैसे करूं?

सोभित हैं सबन के, कानन झलकत झाल।
माहें मोती नंग निरमल, झांईं उठत माहें गाल।। ५ ।।

सब सखियों के कानों में सुन्दर झाला (बड़ी बालियां) हैं, जिनमें निर्मल मोती और नग शोभा देते हैं और झांई गालों पर पड़ती है।

चार चार हार सबन के, उर पर अति झलकत।
कण्ठ सरी कण्ठन में, सबन के सोभित।। ६ ।।

सब सखियों के गले में चार-चार हार शोभा देते हैं और गले में कण्ठसरी हारों के ऊपर शोभा देती है।

एक हार हीरन का, दूजा हेम कंचन।
तीजो हार मानिक को, चौथा हार मोतियन।। ७ ।।

एक हार हीरे का, दूसरा कंचन का, तीसरा मानिक का और चौथा मोतियों का है।

कहूं डोरे कहूं बादले, कहूं खजूरे हार।
कहा कहूं जवेर अर्स के, झलकारों झलकार।। ८ ।।

इन हारों में कहीं डोरा, कहीं बादले, कहीं खजूरे बने हैं। परमधाम के ऐसे जवेरों का वर्णन कैसे करें?

हाथ चूड़ी नंग नवघरी, अंगूठिएं झलकत नंग।
उज्जल लाल हथेलियां, पोहोंचों पोहोंची नंग कई रंग।। ९ ।।

हाथों में चूड़ियां, नगों की नौघरी और अंगूठियां झलकती हैं। सभी की हथेलियां लाल हैं और पोहोंचे के ऊपर कई तरह के नगों के रंग शोभा देते हैं।

जैसे सरूप अर्स के, भूखन तिन माफक।
याही रवेस वस्तर जवेर के, ए अंग बड़ी रूह हक।। १० ।।

परमधाम में सखियों के जैसे स्वरूप हैं आभूषण भी उन्हीं के अनुसार हैं। इस तरह वस्त्र और जवेरों की शोभा है। यह सखियां श्री राजश्यामाजी के अंग हैं।

Nijanand App

जैसी सोभा भूखन की, कहूं तैसी सोभा वस्तर।
कछू पाइए सोभा सरूप की, जो खोले रूह नजर।। ११ ।।

जैसी शोभा आभूषणों की है वैसी ही वस्त्रों की है। यदि आत्मदृष्टि से देखें तब स्वरूपों की शोभा का कुछ अनुभव हो।

वस्तरों के नंग क्यों कहूं, कई जवेरों जोत।
सबे भई एक रोसनी, जानों गंज अंबार उद्दोत।। १२ ।।

वस्त्रों के नगों, जवेरों की जोत का कैसे वर्णन करूं? सबकी तरंगें मिलकर एक हो जाती हैं और लगता है तरंगों का भण्डार भर गया है।

अतन्त नंग अर्स के, और नरम जवेर अतन्त।
अतन्त अर्स रसायन, खूबी खुसबोए अति बेहेकत।। १३ ।।

परमधाम के नग बेशुमार हैं और जवेर भी अत्यन्त नर्म हैं। सब सामग्री अनन्त है जिससे बेशुमार सुगन्धि आती है।

कहूं केते नाम जवेरन के, रसायन नाम अनेक।
कई नाम भूखन एक अंग, सो कहां लग कहूं विवेक।। १४ ।।

जवेरों के, आभूषणों के और रसायन के बहुत नाम हैं। कहां तक कहूं? एक अंग के आभूषणों के कई नाम हैं तो कहां तक उन का विस्तार करूं।

सूरत सकल साथ की, मुख कोमल सुन्दर गौर।
ए छबि हिरदे तो फबे, जो होवे अर्स सहूर।। १५ ।।

यदि हमारे पास जागृत बुद्धि हो तो सुन्दरसाथ के स्वरूप, मुख की कोमलता, सुन्दरता और गोरेपन की छवि हृदय में समा जाए।

रूहें सुन्दर सनकूल मुख, नहीं सोभा को पार।
घट बढ़ कोई न इनमें, एक रस सब नार।। १६ ।।

रूहों के मुख सुन्दर और प्रसन्न दिखाई पड़ते हैं, जिसकी शोभा बेशुमार है। सब सखियां एक सी हैं। कोई शोभा में घट-बढ़ नहीं हैं।

कई रंग सोभित साड़ियां, रंग रंग में कई नंग सार।
भिन्न भिन्न झलके एक जोत, कई किरने उठें बेसुमार।। १७ ।।

कई रंग की साड़ियां शोभा देती हैं, जिनमें कई तरह के नगों के रंग झलकते हैं और इन जुदा-जुदा झलकारों से बेशुमार तरंगें उठती हैं।

हर एक के सिनगार, तिन सिनगार सिनगार कई नंग।
नंग नंग में कई रंग हैं, तिन रंग रंग कई तरंग।। १८ ।।

सखियों के सिनगार में कई तरह के नग और नग में रंग कई तरह की शोभा देते हैं।

Nijanand App

तरंग तरंग कई किरनें, कई रंग नंग किरनें न समाए।
यों जोत सागर सरूपों को, रह्यो तेज पुन्ज जमाए।। १९ ।।

तरंग-तरंग में कई किरणें उठती हैं और इस तरह से कई तरह के नगों के रंग की किरणें समाती नहीं हैं। सखियों की जोत सागर के समान जगमगाती है, जिससे पूरी हवेली में तेज ही तेज का भण्डार नजर आता है।

अब इनके अंग की क्यों कहूं, ठौर नहीं बोलन।
क्यों कहूं सोभा अखण्ड की, बीच बैठ के अंग सुपन।। २० ।।

अब सखियों के अंग की शोभा का वर्णन संसार के झूठे तन से कैसे करूं? कोई बोलने की जगह ही नहीं रही, क्योंकि यह शोभा अखण्ड परमधाम की है।

रंग तरंग किरने कही, कही तेज जोत जुबां इन।
प्रकास उद्दोत सब सब्द में, जो कह्या नूर रोसन।। २१ ।।

मैंने नगों की, रंगों की, तरंगों की, किरणों की जोत तथा तेज का वर्णन किया है। वह सब संसार की जबान से किया है। मेरे शब्दों से ही वहां के तेज को समझ लेना जिसके नूर की शोभा बताई है।

ज्यों ज्यों बैठियां लग लग, त्यों त्यों अरस-परस सुख देत।
बीच कछू ना रेहे सके, यों खैंच खैंच ढिग लेत।। २२ ।।

सखियां जैसे जुड़कर बैठी हैं वैसे उनको अरस-परस सुख मिलता है। श्री राजजी महाराज इस तरह से बिना किसी रुकावट के सखियों को अपने पास खींच लेते हैं।

जानों सागर सब एक जोत में, नूर रोसन भर पूरन।
झांईं झलके तेज दरियाव ज्यों, कई उठे तरंग भिन्न भिन्न।। २३ ।।

इस तरह से लगता है कि सारी हवेली एक सागर के समान एक ही जोत में भरपूर है, जिसकी झांई सागर की तरह भिन्न-भिन्न तरंगों में झलकती है।

ऊपर तले की रोसनी, और वस्तर भूखन की जोत।
और जोत सरूपों की क्यों कहूं, ए जो ठौर ठौर उद्दोत।। २४ ।।

ऊपर-नीचे की रोशनी तथा वस्त्र, आभूषणों और स्वरूपों का तेज सब जगह जगमगा रहा है। इसका वर्णन कैसे करूं?

ऊपर तले थंभ दिवालों, सब जोत रही भराए।
बीच समूह जोत साथ की, बनी जुगल जोत बीच ताए।। २५ ।।

ऊपर-नीचे थंभों में, दीवारों में सब जगह जोत ही जोत जगमगा रही है और हवेली के बीच बैठे सुन्दरसाथ का तथा सुन्दरसाथ के बीच युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजी का तेज जगमगा रहा है।

ए जोत में सोभा सुन्दर, और सरूपों की सुखदाए।
देख देख के देखिए, ज्यों नख सिख रहे भराए।। २६ ।।

इस तेज में श्री श्यामाजी और रूहों के स्वरूपों की शोभा सुन्दर और सुखदाई है। इसे बार-बार देखने पर नख से शिख तक की शोभा भरपूर दिखाई देती है।

Nijanand App

ज्यों दरिया तेज जोत का, त्यों सब दिल दरिया एक।
एक रस एक रोसनी, जुबां क्यों कर कहे विवेक।। २७ ।।

जैसे तेज और जोत का एक सागर बह रहा हो, उसी तरह से सबके दिलों में एक ही सागर, रोशनी, रस दिखाई देता है। इस जबान से वहां का विवरण कैसे बताएं?

जोत उपली कही जुबांन सों, पर रेहेस चरित्र सुख चैन।
सुख परआतम तब पाइए, जब खुलें अन्तर के नैन।। २८ ।।

मैंने सिनगार में जो ऊपर की जोत का वर्णन किया है, उसके रहस्यों में सुख और शान्ति भरी है, परन्तु जब आत्मा की नजर से देखें तभी यह परआतम के सुख प्राप्त हो सकते हैं।

एक रस होइए इस्क सों, चलें प्रेम रस पूर।
फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामाजी हजूर।। २९ ।।

जब आत्मा और परआतम इश्क में एक रस हो जाएं तो प्रेम की तरंगें की तरंगें आएंगी और फिर रूहें इश्क के प्याले भर-भरकर पीकर श्री राजश्यामाजी के सामने होगी, अर्थात् जागृत हो जाएंगी।

क्यों कहूं सुख सबन के, सब अंगों के एक चित्त।
अरस-परस सुख लेवहीं, अंग नए नए उपजत।। ३० ।।

सभी सुन्दरसाथ के अंगों में एक ही दिल है, इसलिए वह अरस-परस नए-नए सुख को अंग में लेते हैं। यह सुख जो सबको मिलता है, कैसे बयान करूं?

साथ समूह की क्यों कहूं, जाको इस्कै में आराम।
अरस-परस सब एक रस, पिउ विलसत प्रेम काम।। ३१ ।।

सखियों का पूरा समूह श्री राजजी महाराज के इश्क में गर्क रहता है और उनसे एक रस होकर प्रेम और विलास के सुख लेता है, जिसका मैं कैसे वर्णन करूं?

इन धाम के जो धनी, तिन अंगों का सनेह।
हेत चित्त आनन्द इनका, क्यों कहूं जुबां इन देह।। ३२ ।।

परमधाम के श्री राजजी महाराज के अंग रूहों का दिल कितने हेत, प्यार और आनन्द से भरा है। इस संसार के झूठे तन की जबान से कहां तक वर्णन करूं।

सुख अन्तर अन्तस्करन के, आवें नहीं जुबांन।
प्रेम प्रीत रीत अन्तर की, सो क्यों कर होए बयान।। ३३ ।।

अन्तःकरण के सुख जबान पर नहीं आते? इस तरह से सखियों के प्रेम, प्रीति और रीति जो उनके अन्दर हैं, उसका कैसे बयान करूं?

सत सरूप जो धाम के, तिनके अन्तस्करन।
इस्क तिनके अंग का, सो कछुक करूं बरनन।। ३४ ।।

रूहें परमधाम के अखण्ड स्वरूप हैं और जिनकी अन्तर-आत्मा में इश्क का ही अंग है, उसका कुछ थोड़ा सा वर्णन करती हूं।

Nijanand App

नख सिख अंग इस्क के, इस्कै संधों संध।
रोम रोम सब इस्क, क्यों कर कहूं सनंध।। ३५ ।।

सखियों के नख से शिख तक सभी अंगों की नस-नस में इश्क भरा है और रोम-रोम में इश्क ही इश्क है, उसकी शोभा का वर्णन कैसे करूं?

अन्तस्करन इस्क के, इस्कै चित्त चितवत।
बातां करें इस्क की, कछू देखें ना इस्क बिन।। ३६ ।।

सखियों के मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार सब इश्क के हैं। इनका चितवन, बातें सब इश्क का है। इश्क के बिना और उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।

तत्व गुन अंग इंद्रियां, सब इस्कै के भीगल।
पख सारे इस्क के, सब इस्क रहे हिल मिल।। ३७ ।।

उनका नूरी तत्व, गुण, अंग, इन्द्रियां, पख सब इश्क में भीगे हैं और सभी इश्क में हिली-मिली हैं।

ए सुख संग सरूप के, जो अन्तर अन्दर इस्क।
आतम अन्तस्करन विचारिए, जो कछू बोए आवे रंचक।। ३८ ।।

यदि आत्मा के अन्तःकरण से विचार कर देखें तो सखियों के अन्दर श्री राजजी महाराज के इश्क की कुछ थोड़ी सी खुशबू मिल सकती है।

जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जाग्रत।
अंग आया होए इस्क, तो कछू बोए आवे इत।। ३९ ।।

परमधाम की जो कोई रूह यहां जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हुई हो और उसके अंग में इश्क आया हो तो कुछ सुगन्धि यहां मिल सकती है।

पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन।
तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन।। ४० ।।

फिर पिया के नैनों से नैन मिलाएं जिससे अधिक आनन्द प्राप्त हो। तब आत्मा के अन्दर से प्रेम रस का पीना सम्भव हो सकता है, जो आत्मा से उत्पन्न होता है।

आतम अन्तस्करन विचारिए, अपने अनुभव का जो सुख।
बढ़त बढ़त प्रेम आवहीं, परआतम सनमुख।। ४१ ।।

आत्मा के अन्तःकरण में विचार करने में अपने को जो सुख का अनुभव होता है, वह बढ़ते-बढ़ते प्रेम में बदल जाता है और परआतम नजर आने लगती है।

इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन।
नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन।। ४२ ।।

मूल-मिलावे से अपनी नजर को नहीं हटाना। आंखों पर पलक भी नहीं झपकना। अच्छी तरह से श्री राजश्यामाजी के स्वरूप को देखें तो इससे अपनी आत्मा को चैन और करार मिलेगा।

Nijanand App

तब प्रेम जो उपजे, रस परआतम पोहोंचाए।
तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए।।४३ ।।

फिर जो प्रेम उत्पन्न होगा उसका रस परआतम को पहुंच जाएगा, तब श्री राजजी महाराज के नैनों से नजर मिलेगी और इशारों से बातें हो जाएंगी, तब आत्मा की नजर खुलेगी।

अन्तस्करन आतम के, जब ए रह्यो समाए।
तब आतम परआतम के, रहे न कछू अन्तराए।।४४ ।।

जब आत्मा के अन्तस्करण में पिया का प्रेम समा जाता है, तब आत्मा और परआतम एक हो जाती है। कुछ भेद रह नहीं जाता।

परआतम के अन्तस्करन, पेहेले उपजत है जे।
पीछे इन आतम के, आवत है सुख ए।।४५ ।।

हमारी परआतम के अन्दर पहले जो चाहना पैदा होती है, वही इस संसार की हमारी आत्मा के तन में सुख आते हैं।

ताथें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल।
सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल।।४६ ।।

इसलिए अब युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजी को अपनी आत्मा के हृदय में बिठा लो और फिर वहां से सुरता को नहीं हटाओ, बल्कि बार-बार इन स्वरूपों पर वारी-वारी जाओ।

सोभा मुखारबिन्द की, क्यों कर कहूं तेज जोत।
रस भर्‌यो रसीलो दुलहा, जामें नित नई कला उद्दोत।।४७ ।।

श्री राजश्यामाजी के रस भरे मुखारबिन्द की जोत और तेज का कैसे वर्णन करूं? क्योंकि मेरे रसिया दूल्हा में नित्य ही नई-नई कलाएं दिखाई देती हैं।

कमी जो कछुए होवहीं, तो कहिए कला अधिकाए।
ए तो बढ़े तरंग रंग रस के, यों प्रेमे देत देखाए।।४८ ।।

कभी कमी नजर आए तो कहें कि कला अधिक है। यहां तो इश्क के रस की बड़ी-बड़ी तरंगें हैं। ऐसा श्री राजजी महाराज अपना अद्‌भुत प्रेम दिखा रहे हैं।

बल बल सोभा सरूप की, बल बल वस्तर भूखन।
बल बल मीठी मुसकनी, बल बल जाऊं खिन खिन।।४९ ।।

अब ऐसे स्वरूप की शोभा पर वस्त्र, आभूषण पर, मीठी मुस्कान पर पल-पल बलिहारी जाऊं।

बल बल बंकी पाग के, बल बल बंके नैन।
बल बल बंके मरोरत, बल बल चातुरी चैन।।५० ।।

श्री राजजी महाराज की बांकी पाग पर, तिरछे नैनों पर, तिरछी नजर पर, चतुराई और चैन पर बलि-बलि जाती हूं।

Nijanand App

बल बल तिरछी चितवनी, बल बल तिरछी चाल।
बल बल तिरछे वचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल।।५१ ।।

श्री राजजी महाराज की तिरछी चितवन, तिरछी चाल और तिरछे वचन, जिन्होंने मेरी तिरछी हालत कर दी है। उस पर मैं बलिहारी जाती हूं।

बल बल छबीली छब पर, दंत तंबोल मुख लाल।
बल बल आठों जाम की, बल बल रंग रसाल।।५२ ।।

रसिया की रसीली छवि पर, दांतों पर, मुख के खाए पान की लालिमा पर और रात-दिन इश्क के रंग में रंगे अंगों पर बलिहारी जाती हूं।

बल बल मीठे मुख के, अंग अंग अमी रस लेत।
कई बिध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत।।५३ ।।

पियाजी के मीठे मुख से हम रूहें अमीरस पान करते हैं और पल-पल अपनी रूहों को बड़े प्यार से कई तरह के सुख देते हैं।

बल बल जाऊं चरन के, बल बल हस्त कमल।
बल बल नख सिख सब अंगों, बल बल जाऊं पल पल।।५४ ।।

अपने धनी के चरण कमलों पर, हस्त कमल पर, नख से शिख तक सभी अंगों पर पल-पल वारी वारी जाती हूं।

बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत।
महामत बल बल सबों अंगों, फेर फेर वारने लेत।।५५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि पियाजी के प्रेम पर, प्यार भरी चितवन (नजर पर) तथा सब अंगों पर मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ९४२ ।।

सागर पांचमा इस्क का

पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर।
प्याले इस्क दरियाव के, पीवें अर्स रूहें फकीर।। १ ।।

[रंग महल के वायब (पच्छिम और उत्तर के) कोने में घृत सागर] पांचवां इश्क का सागर गहरा और गम्भीर है, जिसके इश्क के प्याले अर्श की रूहें बड़े प्यार से पीती हैं।

इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर।
ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर।। २ ।।

इस इश्क के सागर में श्री राजश्यामाजी युगल किशोर के रस की लहरें आती हैं और यह पांचवां सागर अति सुखदाई है।

Nijanand App